International Journal of Applied Research 2017; 3(4): 891-892

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(4): 891-892
www.allresearchjournal.com
Received: 17-01-2017
Accepted: 25-03-2017

डॉ. वीरेंद्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
राजधानी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

Correspondence
डॉ. वीरेंद्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
राजधानी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

रो मत धनिया, अब कब तक जिलाएगी ?

डॉ. वीरेंद्र कुमार

शोध सार: जीवन और समाज में नीति और ईमान का साथ नहीं छोड़ना। जीवन की अभिलाषाओं को पाने के लिए संघर्ष करते रहना और प्रत्येक हार के पश्चात दुगुने उत्साह के साथ अनवरत उठने का प्रयत्न करना, अपने और अपने परिवार के साथ अन्यों की चिंता करते हुए समाज को सुधारने का निरंतर प्रयास करना। पुरखों से प्राप्त संपत्ति मरजाद (मूल्यों) को बचाए रखना, जिससे भावी जीवन सुरक्षित रह सके और अंतरजातीय प्रेम की विवाह में स्वीकृति। वंचितों को अन्याय को चुपचाप ना सहते रहने का संदेश देना तथा एकजुट होकर अमानवीयता खिलाफ लड़ना; इस शोध का सार तत्त्व है जो मुंशी प्रेमचंद के अमर उपन्यास गोदान के माध्यम से व्यक्त हुआ है।

हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद का स्थान महत्त्वपूर्ण है 'गोदान 'उनकी अमर कथा कृति है, जो आज भी बहुत प्रासंगिक है।कृष्ण देव झारी के शब्दों में "गोदान कृषक संस्कृति की करुण कहानी है।" [1]

होरी के जीवन की एक मामूली अभिलाषा है- गाय खरीदना - गाय खरीदने के लिए वह संघर्ष करता है। भोला की सगाई की बात करता है और कुछ जुगाड़ करता है। गाय घर में आ जाती है किंतु उसका भाई हीरा होरी की समृद्धि नहीं देख पाता और गाय को जहर देता है। गाय मर जाती है और हीरा घर से भाग जाता है।

होरी की संघर्ष भरी हुई कहानी यहीं से आगे बढ़ती है। होरी हीरा के परिवार को भी पालता हुआ अनेक कष्टों के बीच घिर जाता है लेकिन अपने जीवन के संघर्षों में हारता रहा "उसने नीयत भी बिगाड़ी, अधर्म भी कमाया, कोई ऐसी बुराई ना थी, जिसमें वह पड़ा ना हो, पर जीवन की कोई अभिलाषा ना पूरी हुई और भले दिन मृगतृष्णा की भांति दूर ही होते चले गए।" [2]

होरी की चिंता यह थी कि परंपरा से जो पुरखों की जमीन है, वह नहीं बेची जाए और बेदखली ना हो। लेकिन अनेक कष्टों के बीच उसे आखिर में तीन बीघे की जमीन का बचाना कठिन हो गया "उसने अपने को इस तीन बीघे के किले में बंद कर लिया था और उसे अपने प्राणों की तरह बचा रहा था। फांके सहे, बदनाम हुआ, मजूरी की, पर किले को हाथ से न जाने दिया, मगर अब वह किला भी हाथ से निकला जाता था। तीन साल से लगान बाकी पड़ा हुआ था।" [3]

रामविलास शर्मा के शब्दों में " प्रेमचंद ने जब गोदान लिखा था, तब वह खुद भी कर्ज में थे। गोदान की मूल समस्या ऋण की समस्या है। इस उपन्यास में किसानों के साथ मानो वह आप बीती भी कह रहे हों।" [4]

ऐसी विचित्र परिस्थिति में पंडित दातादीन उसे रूपा का विवाह रामसेवक महतो के साथ करने की सलाह देते हैं। पंडित दातादीन जब बेदखली के संबंध में पूछता है तो होरी कहता है" मेरे पास रुपये होते तो यह दुर्दसा क्यों होती। खाया नहीं, उड़ाया नहीं, लेकिन उपज ही ना हो और जो भी हो वह कौड़ियों के मोल बिके, तो किसान क्या करें?" [5]

पंडित दातादीन होरी से कहते हैं-" रामसेवक महतो को तो जानते हो न ?"..... अगर रुपया का ब्याह उससे करना चाहो, तो मैं उसे राजी कर लूं"। [6]

रामसेवक महतो होरी से केवल चार साल ही छोटा था । ऐसा प्रस्ताव पाकर होरी टूट जाता है - "कहां फूल सी रूपा और कहां वह बूढ़ा ठूँठ । जीवन में होरी ने बड़ी -बड़ी चोट सही थी, मगर यह चोट सबसे गहरी थी। आज उसके ऐसे दिन आ गए हैं कि उससे लड़की बेचने की बात कही जाती है।" [7]

मगर होरी अपने इस तीन बीघे की जमीन को पुरखों की निशानी समझकर बचाए रखना चाहता है और धनिया को इस संबंध में समझाने की कोशिश करता है और जब रामसेवक महतो स्वयं उनके घर आ जाते हैं तो धनिया भी परिस्थिति से समझौता करने में अपनी भलाई समझती है। लेकिन होरी लड़की को बेचता नहीं है। वह सोचता है कि वह रुपए उस से
उधार लेकर चुका देगा। उसे लोगों के हँसने की परवाह नहीं है - "लोग हँसेंगे लेकिन जो लोग खाली हँसते हैं और कोई मदद नहीं करते, उनकी हँसी की वह क्यों परवाह करे।" [8]

गोबर घर पहुंचकर जब इस स्थिति से अवगत होता है तो जरा भी गर्म नहीं होता । बड़े आदर भाव से वह होरी को कहता है "इसमें अपराध की कोई बात नहीं है दादा। हाँ रामसेवक के रुपए अदा कर देने चाहिए। आखिर तुम क्या करते? मैं किसी लायक नहीं, तुम्हारी खेती में उपज नहीं, करज कहीं मिल नहीं सकता, एक महीने के लिए भी घर में भोजन नहीं। ऐसी दशा में तुम और कर ही क्या सकते थे? जैजात ना बचाते तो रहते कहां?" [9]

गोबर आने वाली पीढ़ी का प्रतीक पात्र है जिसमें प्रेमचंद ने अपनी कलम से अलग रंग भरा है। वह होरी को समझाता है " जिसे पेट की रोटी मयस्सर नहीं, उसके लिए मरजाद और इज्जत सब ढोंग है। औरों की तरह तुमने भी दूसरों का गला दबाया होता, उनकी जमा मारी होती तो तुम भी भले आदमी होते । तुमने कभी नीति को नहीं छोड़ा, यह उसी का दंड है..... मुझ से यह कभी बरदास न होता कि मैं कमा - कमा कर सबका घर भरूँ और आप अपने बाल बच्चों के साथ मुँह में जाली लगाए बैठा रह हूँ।" [10]

प्रेमचंद विराट अनुभव के रचनाकार हैं। उन्हें अपने जीवन के अंतिम वर्षों में यह कटु अनुभव हो गया था कि होरी की तरह जीने वाले व्यक्ति अंततः शोषण के शिकंजे में फँसतें जाएंगे। ऐसा नहीं है कि प्रेमचंद दूसरे व्यक्ति का गला काटने के पक्ष में अपना समर्थन देते हैं बल्कि वे होरी की तरह चुपचाप शोषण को सहते जाने के खिलाफ गोबर के स्वर को मुखरता प्रदान करते हैं। जब दातादीन होरी को बुलाकर रुपया की शादी रामसेवक महतो से करवा कर उसके हाथ में दो सौ रुपये पकड़वाते हैं तो उसकी स्थिति दयनीय हो जाती है "होरी ने रुपए लिए तो उसका हाथ कांप रहा था, उसका सिर ऊपर न उठ सका । मुंह से एक शब्द न निकला जैसे अपमान के अथाह गड्ढे में गिर पड़ा हो और गिरता चला जाता है। आज तीस साल तक जीवन से लड़ते रहने के बाद वह परास्त हुआ है और ऐसा परास्त हुआ कि मानो उसको नगर के द्वार पर खड़ा कर दिया गया है और जो आता है उसके मुँह पर थूक देता है।" [11]

गोदान उपन्यास में रामसेवक पात्र के माध्यम से प्रेमचंद एक स्थान पर लिखते हैं- "थाना - पुलिस, कचहरी, अदालत सब हैं हमारी रच्छा के लिए, लेकिन रच्छा कोई नहीं करता चारों तरफ लूट है। जो गरीब है, बेकस है, उसकी गर्दन काटने के लिए सभी तैयार रहते हैं। भगवान न करें, कोई बेईमानी करें। यह बड़ा पाप है लेकिन अपने हक और न्याय के लिए न लड़ना उससे भी बड़ा पाप है। तुम्हीं सोचो, आदमी कहां तक दबे? यहां तो जो किसान है वह सब का नरम चारा है। पटवारी को नजराना और दस्तूरी न दे तो गांव में रहना मुश्किल। जमींदार के चपरासी और कारिंदों का पेट न भरे तो निबाह न हो। थानेदार और कानिसटिबिल तो जैसे उसके दामाद हैं...।" [12]

प्रेमचंद उन किसानों को रास्ता सुझाते हैं।

रामसेवक उपन्यास में कहता है" मैंने गांव भर में डौंडी पिटवा दी है कि कोई भी बेसी लगान न दो और न खेत छोड़ो, हमको कोई कायल कर दे तो हम जाफा देने को तैयार हैं लेकिन जो तुम चाहो कि बेमुँह के किसानों को पीसकर पी जाएँ तो यह ना होगा..... जमींदार ने देखा, सारा गांव एक हो गया तो लाचार हो गया।..... इस जमाने में जब तक कड़े ना पडो, कोई नहीं सुनता।" [13]

गोबर जब रुपया के विवाह में शहर से गांव आता है तो देखता है - "घर का एक हिस्सा गिरने- गिरने को हो गया था द्वार पर केवल एक बैल बंधा हुआ था, वह भी नीमजान... यहाँ तो जिसे देखो, वही रोब जमाता है... मेहनत करके अनाज पैदा करो और जो रुपये मिले वह दूसरे को दे दो... सारे गांव पर यह विपत्ति थी। ऐसा एक आदमी भी नहीं जिसकी रोनी सूरत न हो... चलते- फिरते थे, काम करते थे, पिसते थे, घुटते थे ... अभी तक खलिहानों में अनाज मौजूद है मगर किसी के चेहरे पर खुशी नहीं है। बहुत कुछ तो खलिहान में ही तुलकर महाजनों और कारिंदों की भेंट हो चुका है और जो कुछ बचा है वह भी दूसरों का है।" [14]

'गोदान 'में प्रेमचंद ने यथार्थ चित्रण ही नहीं किया बल्कि एक दिशा का संकेत भी किया है। जब तक गांव का युवा शहर की तरफ नहीं आएगा और शहर से ज्ञान-विज्ञान से नहीं जुड़ेगा तब तक गांव की यह तस्वीर धुंधली रहेगी। गोबर गांव से शहर आता है उसकी सोच और दिशा बदलती है "उसने सुना है और समझा है कि अपना भाग्य खुद बनाना होगा, अपनी बुद्धि और साहस से इन आफतों पर विजय पाना होगा। कोई देवता और कोई गुप्त शक्ति उसकी मदद करने न आएगी।"[15]

उपन्यास में प्रेमचंद ने वह सूत्र भी हाथ में थमाया है जो आज भी प्रासंगिक है "दुख ने तुम्हें एक सूत्र में बांध दिया है। बंधुत्व के इस दैवी बंधन को क्यों अपने तुच्छ स्वार्थों से तोड़े डालते हो? उस बंधन को एकता का बंधन बना लो।"[16]

शोषण के खिलाफ एकत्रित होकर ही अमानवीयता से लड़ा जा सकता है। गोदान में प्रेमचंद ने भारतीय समाज में प्रेम के अंतर्जातीय रूप की परिणीति विवाह में की है। गोबर का भोला की बेटी झुनिया से प्रेम हो जाता है और परिणाम स्वरूप बिरादरी अनेक संकट खड़ा कर देती है और झुनिया का पिता भोला भी उसे बुरा कहता है तो धनिया कहती है- "तू कहाँ जाती है बहू, चल घर में। यह तेरा घर है, हमारे जीते भी और हमारे मरने के पीछे भी।"[17]

हीरा को होरी क्षमा कर देता है। उसके परिवार का ध्यान रखता है। जब धनिया कहती है - "गाय तो कभी आ गई होती लेकिन तुम जब कहना मानो। अपनी खेती तो संभाले न संभलती थी, पुनिया का भार भी अपने सिर ले लिया।

"क्या करता, अपना धरम भी तो कुछ है। हीरा ने नालायकी की तो उसके बाल-बच्चों को संभालने वाला कोई तो चाहिए था।"[16]

हीरा के मिलने पर होरी बहुत प्रसन्न होता है। हीरा होरी को दुबले होने की बात कहता है तो होरी जवाब देता है "सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है I ऐसे मोटेपन में क्या सुख? सुख तो जब है कि सभी मोटे हो।"[18]

यही है प्रेमचंद की व्यापक मानवीय संवेदना जो उपन्यास में दिखाई देती है।

गोबर के बेटे मंगल के लिए दूध की व्यवस्था करने के लिए गाय लाने के लिए और रामसेवक महतो के पैसे चुकाने के लिए होरी एक ठेकेदार के यहाँ काम करते-करते बेदम हो जाता है और अंततः गिर जाता है। धनिया दौड़ी आती है। होरी की चेतना लौटती है। प्रेमचंद के शब्दों में - "धनिया को दीन आंखों से देखा, दोनों कोनों से आंसू की दो बूंदे ढुलक पड़ी। क्षीण स्वर में बोला"-मेरा कहा-सुना माफ करना धनिया। अब जाता हूं। गाय की लालसा मन में ही रह गई। अब तो यहाँ के रुपये- करिया- करम में जाएंगे। रो मत, धनिया अब कब तक जिलाएगी?"[19]

प्रेमचंद ने उपन्यास में शोषण का व्यापक चित्रण यथार्थवादी दृष्टि से किया है। इसके साथ ही प्रेमचंद ने 'गोदान' में अभावमयी और अत्याचारी स्थितियों में एक सूत्र में बंधकर स्वार्थों से ऊपर उठकर एक होना होगा तभी इस शोषण से लड़ा जा सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. प्रेमचंद और उनका गोदान :एक मुल्यांकन - कृष्णदेव झारी -पृ.सं.-78
2. 'गोदान 'प्रेमचंद, के. एल.पचोरी प्रकाशन- 2014, पृ.सं.308
3. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 308
4. प्रेमचंद और उनका युग --रामविलास शर्मा -पृ.सं.-115
5. गोदान 'प्रेमचंद, के. एल.पचोरी प्रकाशन 2014 पृ.सं.308
6. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 309
7. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 309
8. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 310
9. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 315
10. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 315
11. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 314
12. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 311
13. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 312
14. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 313
15. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 314
16. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 314
17. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 136
18. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 317
19. ----------वही ----------पृष्ठ संख्या 318

अन्य ग्रंथ

1. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा
2. हिंदी उपन्यास- एक अंर्तयात्रा - रामदरश मिश्र
3. प्रेमचंद: एक विवेचन - इंद्रनाथ मदान
4. हिंदी उपन्यास - संपादन नामवर सिंह